दस मिनट

रामकुमार वर्मा

डॉ. रमाकुमार वर्मा का जन्म सन् 1905 को मध्यप्रदेश के सागर जिले में हुआ। उनके पिता लक्ष्मीप्रसाद वर्मा डिप्टी कलकटर और माता राजरानी देवी कवयित्री थे। वे हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि, साहित्यकार, व्यंग्यकार, नाटककार और आला है। वे एक सफल अभिनेता भी है। उन्होंने सौ से अधिक सफल रंगमंचीय और रेडियो एकांकी लिखे हैं। दुःखांत नाटक उन्हें बहुत प्रिय हैं। डॉ. रमाकुमार वर्मा का लिखा हुआ तार्किक और हृदयस्पर्शी एकांकी नाटक है 'दस मिनट'। इस एकांकी के द्वारा तीन विषयों पर हमारा ध्यान आकृष्ट किया गया है। वे हैं विपत्ति में काम आनेवाला ही सच्चा मित्र है, पर स्त्री को मैली दृष्टि से देखनेवालों को जान तक गँवानी पड़ेगी तथा न्याय की रक्षा के नाम पर कानून को हमें अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए।

महादेव और बलदेव दोनों परम मित्र थे। वे एक दूसरे की रक्षा में अपनी जान तक देने तैयार थे। बलदेव की एक बहन थी। उसका नाम वासंति था। बलदेव अपनी बहन को प्राणों से भी बढ़कर प्यार करता था। केशव नामक एक युवक वासंति को मैली दृष्टि से देखता था। इसलिए बलदेव ने केशव को छुरी से मार डाला। लाश को काँटे की झाड़ी में फेंक दिया। उसके बाद आधी रात को बलदेव अपने मित्र महादेव के घर गया। घटना का पूरा विवरण सुनाया। महादेव कहता है कि मैली दृष्टि से देखनेवालों की आँखों में छुरी घुसेड़कर मारना चाहिए था। महादेव की यह बात बलदेव को अच्छी लगी। वह केशव की लाश की आँखों में छुरी घुसेड़ने वहाँ से तुरंत निकल गया। निकलते-निकलते यह कह गया कि वह दस मिनट में वहाँ वापस आ जाएगा। इसी बीच पुलीस ने महादेव के कमरे के दरवाज़े को खटखटाया। पुलिस इंस्पेक्टर केशव के खून के मामले में पूछताछ शुरू कर दी। महादेव ने पुलिस से कहा कि दस मिनट में खूनी यहाँ आ जाएगा। उसके आने तक आप बाहर रहिए। पुलिस भी दस मिनट के लिए कमरे से बाहर तली गई। इसी बीच बलदेव अपना काम पूरा कर वहाँ आ पहुँचा। महादेव ने बलदेव को पुलिस से बचाने के उद्देश्य से बलदेव के खून रंगे कपड़े खुद पहन लिया और छुरी को खुद हाथ में उठा लिया। बलदेव को नए कपड़े पहनकर वहाँ से निकलने के लिए कहा। बलदेव महादेव के इस व्यवहार में छिपे रहस्य को समझ नहीं सका।

वह नया कपड़ा पहनकर वहाँ से निकल गया।

दस मिनट बाद पुलिस अंदर आई। हाथ में छुरी लेकर खून से रंगे कपड़ों में खड़े महादेव को देखकर पुलिस को आश्चर्य हुआ। महादेव ने पुलिस से कहा कि उसने ही खून किया है। लेकिन पुलिस को महादेव की बात पर विश्वास नहीं हुआ। तो पुलिस को विश्वास दिलाने के लिए महादेव ने कहा कि लाश के बगल में और आँखों में छुरी से वार का निशान रहा होगा और लाश काँटे की झाड़ी में पड़ी हुई मिली होगी। महादेव की यह बात सुनकर पुलिस को

VIMNSS COLLEGE LIBRARY

विश्वास हुआ कि केशव का खून महादेव ने किया है। पुलिस महादेव को कैद करके उसे लेकर थाने की ओर चलने लगी।

शादी की बात

स्वदेश दीपक

स्वदेश दीपक का 'शादी की बात' एक हास्य-व्यंग्य प्रधान एकांकी है। यह एकांकी समाज के मध्यवर्ग और उच्च वर्ग के बीच के लोगों से संबंध रखता है। शुरू से यह हँसी की फुलझड़ियाँ बिखेरता है। लड़की देखने चकोरी के घर आया चाँद नौकरानी चमेली को देखकर उसे निर्दिष्ट लड़की समझता है और बड़े अदब से पेश आता है तो चमेली सकपका जाती है। बी. ए पास चाँद एकदम विदूषक जैसा व्यवहार करता है तो उसका पिता प्रभातचंद्र उसे डाँटता है। पुत्र की विदूषकता और पिता का उग्र कोप एक साथ हँसी और गंभीरता का वातावरण बनाता है। पुत्र की बेवकूफियों पर पिता की असहिष्णुता हास्य उपजाए बिना नहीं रहती। पिता की सिखाई व्यवहारिक बातों पर अमल करने में जब बेटा असफल होता है तब पिता पुत्र को मारने के लिए छड़ी उठाता है तो सामने लड़की और उसकी माता को देखकर खिसिया जाता है। अपने को कवि माननेवाला बी. ए पास चाँद अपने से कम-पढ़े लिखे पिता का आदर यों करता है कि पिता की उग्रता का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता दिखाई देता।

लड़की चकोरी माता रजनीदेवी के साथ बैठक में आकर लड़की का परिचय देती है तो चाँद पिता को बोलने का अवसर दिए बिना अपना नाम और शैक्षिक योग्यता बताने के साथ अपने परम पूज्य पिता का नाम और अपने से कम पढ़ा-लिखा होने की बात भी कह डालता है। उसकी विदूषकता उस समय पराकाष्ठा तक पहुँचती है जब वह हर बात को अमेरिका मानक पर तौलता है।

लड़के-लड़की को बात करने का अवसर देने के लिए प्रभातचंद्र और रजनी देवी बाहर बगीचे में चले जाते हैं। अकेले होने पर चाँद और चकोरी कनखियों से देखकर शरमाकर गुमसुम खड़े रहते हैं, मानो उन्हें बोलने के लिए शब्द नहीं मिलते। चाँद पिता की सिखाया सब भूल गया। उस की ऊलजलूल हरकतें जारी रहती हैं। चकोरी चाय बना देती है तो चाँद चाय उलटे ढंग से बनाने की बात करता है।

चाँद अपनी होने वाली वधू की विस्तृत जाँच करना चाहता है। पहले वह उसकी चाल देखने के लिए चलने को कहता है। चकोरी पलट कर पूछने को बाध्य होती है कि क्या मैं कोई घोड़ी हूँ, जो आप मेरी चाल देखना चाहते हैं। फिर चाँद फीते से चकोरी की लंबाई नापता है। वह तौलने की मशीन लाकर चकोरी का वजन तौलता है। जाँच के सिलसिले में वह लड़की की कमर का नाप लेने लगता है तो चकोरी विरोध करके पीछे हटते हुए कहती है कि यह आप तो बेशरमी

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

की हद कर देते हैं। आगे चाँद चकोरी की आँखों और दाँतों की जाँच करके निश्चित करता है कि उस के पूरे बत्तीस दाँत हैं कि नहीं। कमीज़ का टूटा बटन टांकने की परीक्षा में सुई चाँद के सीने में चुभता है, तो वह चीख उठता है। गायन और नाच की अभिरुचि की भी परीक्षा ली जाती है।

लड़की के वापसी प्रश्नों के उत्तर में कही गई बातों से ज़ाहिर होता है कि चाँद बेरोजगार परोपजीवी युवक है। चकोरी कसम खाकर कहती है कि ऐसा एक लड़का उसे नहीं चाहिए। इतने में प्रभातचंद्र और रजनीजेवी अंदर आते हैं तो चाँद कहता है कि वह चकोरी का वियोग नहीं सह सकता। इस पर प्रभातचंद्र सांत्वना के स्वर में कहता है कि चाँद को चकोरी का वियोग सहना नहीं पड़ेगा, क्योंकि प्रभातचंद्र और रजनीदेवी की शादी तैय हो गई है। तब चाँद और चकोरी भाई बहन के समान हो जाएंगे। यही एकांकी की चरमसीमा है। चाँद को निराश होकर चकोरी को बहन मानना पड़ता है। एकांकी में भरपूर हँसी का वातावरण रहता है। अंत में तो प्रभातचंद्र की घोषणा सुनकर दर्शक या पाठक हँसी रोक नहीं पाता।

<u>जान से प्यारे</u>

ममता कालिया

'जान से प्यारे' एकांकी में मानव-संबंधों के किस पहलू पर प्रकाश डाला गया है?

हिंदी की प्रख्यात लेखिका ममता कालिया का एक व्यंग्य एकांकी है - 'जान से प्यारे'। इसमें उन्होंने मानव संबंधों में बराबर होती जा रही ईमानदारी और आत्मीयता की गिरावट का व्यंग्यात्मक चित्रण किया है। आधुनिक युग में पारिवारिक संबंधों में प्रेम और आपसी ऊष्मा लगभग खतम हो गई है और बनावटी प्यार और दिखावे ने स्थान ले लिया है।

डॉ. कौशिक एक वैज्ञानिक है। एक दिन अचानक वह उत्तेजित होकर चिल्लाने लगा, 'युरेका'। उसने अपने सहयोगी अविनाश को अपने नए आविष्कार के बारे में बताया। उसका दावा था कि उसने एक ऐसे घोल का आविष्कार किया है जिसके प्रयोग से मरा हुआ प्राणी पुनः जीवित होगा। उसने छह घंटे पहले मरे एक कॉक्रोच पर इसका प्रयोग किया और तुरंत वह चलने लगा। अविनाश ने संदेह प्रकट करते हुए कहा कि कॉक्रोच ऐसा बेढब जीव है जो मरा हुआ-सा रहकर फिर चल देता है। लेकिन डॉ.कौशिक खुश था कि वह इस घोल से निर्जीव प्राणियों को नया जीवन दे सकता है। अविनाश ने इसकी स्वीकार्यता पर संदेह प्रकट किया कि यह प्रक्रिया मृत्यु को चुनौती देना है क्योंकि जीवन और मृत्यु चिर सत्य है। लेकिन डॉ.कौशिक आत्मविश्वास के साथ कहता है कि जीवन तो सत्य है परन्तु इस नये आविष्कार के साथ मृत्यु सत्य न रह गयी है।

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

अगले दिन अखबार में शोक समाचार के पृष्ठ पर कई जगह निशान लगाकर डॉ.कौशिक सहयोगी अविनाश को साथ लेकर भावना नगर कॉलनी के एक घर में पहुंच गया। बूढ़े पिता की मृत्यु पर शोक संतप्त पुत्रों को अपने पास बुलाकर डॉ.कौशिक ने अपने नव निर्मित घोल के बारे में उनसे कहा। वहाँ मृतक के दाह संस्कार का इंतज़ाम चल रहा था। किसी की ओर से पिता को पुनर्जीवित करने के प्रस्ताव के प्रति अनुकूल प्रतिक्रिया नहीं हुई। वे पिता के वसीयतनामे और लेन-देन की पूर्णता पर संतुष्ट थे। वहाँ हो रहे इंतज़ाम में बाधक समझकर बड़े लड़के ने अदब से डॉ. कौशिक को विदा किया। वहाँ से निकलकर डॉ. कौशिक किसी दूसरे घर की ओर चल पड़ा जहाँ एक बूढ़ी माता की मृत्यु हुई थी। उसने दुःखी पुत्र को अलग ले जाकर अपने आगमन का उद्देश्य बताया। उसकी बात सुनकर वह दुखी पुत्र असमंजस में पड़ गया, परंतु उस की पत्नी ने दृढ़ता से कहा कि माँ लंबी जान लेवा बीमारी से तड़प-तड़प कर मरी है और उसका अपना जीवन भी सेवा-शुश्रूषा से हराम हो गया था। माँ को जीवन देने का अर्थ है बहू की मौत। डॉ. कौशिक को वहां से भी निराश होकर लौटना पड़ा।

अपने नये आविष्कार पर पूर्ण विश्वास रखनेवाले डॉ.कौशिक उसके प्रयोग से किसी को जीवित कराने की अदम्य इच्छा से फिर एक घर पहुँचा जहाँ एक कैप्टन शर्मा की मृत्यु हुई थी। उसने नवयुवती विधवा के सामने अपने नए फॉर्मुले की पेशकश की। वह युवती डॉ. कौशिक को बीमा कंपनी का आदमी समझकर बात करने को तैयार हुई थी। डॉ. कौशिक की बात सुनकर उसको गुस्सा आया और उसे वहाँ से भगा दिया। फिर वह 'इबादतनगर' के एक मकान में गया जहाँ एक जवान आदमी की नववधू मर गई थी। डॉ. कौशिक का प्रस्ताव सुनकर पति दार्शनिक अंदाज़ में कहने लगा कि मेरी कम्मो मेरी रग-रग में समाई हुई है, फिर उसे जीवित करने की क्या ज़रूरत है। डॉ. कौशिक ने देखा कि उस जवान पति के हाथ के समाचार पत्र के वैवाहिक विज्ञापनों के पृष्ठ पर जगह-जगह पर लाल निशान लगाए गए हैं। डॉ. कौशिक समझ गया कि अविनाश का कथन ही ठीक था कि पैसे से बड़ा प्रेम नहीं, मौत जालिम है मगर जिंदगी के कायदे उससे भी ज़्यादा जालिम है।

इस एकाँकी के द्वारा लेखिका ने प्रेम के दिखावे के खोखलेपन पर व्यंग्य किया है।

<u>छोटी मछली बड़ी मछली</u>

तेजपाल चौधरी

तेजपाल चौधरी का जन्म 15 सितंबर, 1936 को बावली, उत्तर प्रदेश में हुआ। वे एक ख्याति प्राप्त कवि उपन्यासकार, एकांकीकार, आलोचक, व्यंग्य लेखक, संपादक और अनुवादक हैं। आलोक सांस्कृतिक अकादमी, जलगाँव के सचिव पद पर रहकर उन्होंने अनेक नाटकों और एकांकियों का मंचन का नेतृत्व किया। उनकी 25 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

हैं। 'कालचक्र' श्वा की बूंद, मशाल जलती रहे आदि उनके प्रसिद्ध एकांकी संग्रह हैं।

'छोटी मछली बड़ी मछली' तेजपाल चौदरी का एक मज़ेदार एवं हास्य प्रधान एकांकी है। मध्यवर्गीय परिवार का रमाकांत एम.डी पास अपने पुत्र डॉक्टर विनय का विवाह करोड़पति जगदीश प्रसाद की इकलौती बेटी नीलिमा से करना चाहता है। रमाकांत के घर में जगदीश प्रसाद के स्वगत की तैयारी हो रही है। रमाकांत किसी भी कीमत पर यह शादी कराने के फिक्र में है; क्योंकि जगदीश प्रसाद करोड़पति है और नीलिमा उनकी इकलौती लड़की है। लेकिन रमाकांत का बेटा डॉ. विनय को इस रिश्ते में बिलकुल दिलचस्पी नहीं। जगदीश प्रसाद को स्टेशन से लेने के लिए रमाकांत अपने मित्र तथा जगदीश प्रसाद का रिश्तेदार ओमप्रकाश को भेजकर घर की तैयारी में लगे हैं। इसी बीच एक प्रौढ़ व्यक्ति और एक युवती रमाकांत के घर में आ आते हैं। उन्हें जगदीश प्रसाद और उनकी बेटी नीलिमा समझकर रमाकांत बड़े आदर के साथ उनका स्वागत करता है। बातचीत के दौरान रमाकांत अपनी हैसियत को बढ़-चढ़ाकर पेश करते हुए अतिथियों को प्रभावित करने की कोशिश करता है। बड़ी विनम्रता दिखाते हुए वह कहता है कि उस पर लक्ष्मी माता की कृपा से आढ़त की दूकान, एक फार्म, क्लिनिक, फ्लाटों की खरीद फरोख्त, रहने के बंगले के अलावा सदर बाज़ार में किराए पर दी हुई एक कोठी है और कारोबार इतना बढ़ गया है कि पलक मारने को भी फुरसत नहीं मिलती। प्लॉटों की खरीद-फरोख्त भी कर लेते हैं। बेटा डॉ.विनय अपना क्लिनिक चलाता है। घर में दो कारें हैं, अब और एक खरीदना चाहता सोच रहा है। पैसा तो सुख-सुविधा के लिए ही तो हैं यही उसका आदर्श है ।

बातचीत समाप्त करके प्रौढ़ आदमी विदा लेने लगा तो रमाकांत ने पूछा कि तारीख वगैरह पक्का करने के लिए कब मुलाकात होगी। तब प्रौढ़ ने कहा कि वे स्टेटमेंट वगैरह तैयार कर लेंगे परसों इनकम टैक्स ऑफिस आकर हस्ताक्षर कर दें। तभी रमाकान्त समझ पाया कि वह प्रौढ़ आदमी इनकम टैक्स ऑफीसर पी.बी.सक्सेना और उनके साथ आयी युवती मिस शुक्ला है। उनके जाने पर लड़कीवालों के आगमन की सूचना रमाकांत को मिली तो वह उनके स्वागत के लिए जाता है। ओमप्रकाश उसे आश्वासन देता है कि इनकम टैक्सवालों से डरने की कोई ज़रूरत नहीं है, वह किसी नेता की सहायता से इस समस्या का समाधान करवा देगा। अन्त में नौकर गणेशी दिल्लगी के अंदाज़ में कहता है कि बड़ी मछली को फँसाने के लिए बड़ा चारा डाला गया, पर घडियाल ही फँस गया। बड़े करोड़पति को फँसाने के लिए रमाकांत ने बढ़ा-चढ़ाकर संपत्ति का ब्यौरा दिया और स्वयं इनकम टैक्स वाले के जाल में फँस गया

VTM NSS COLLEGE LIBRARY